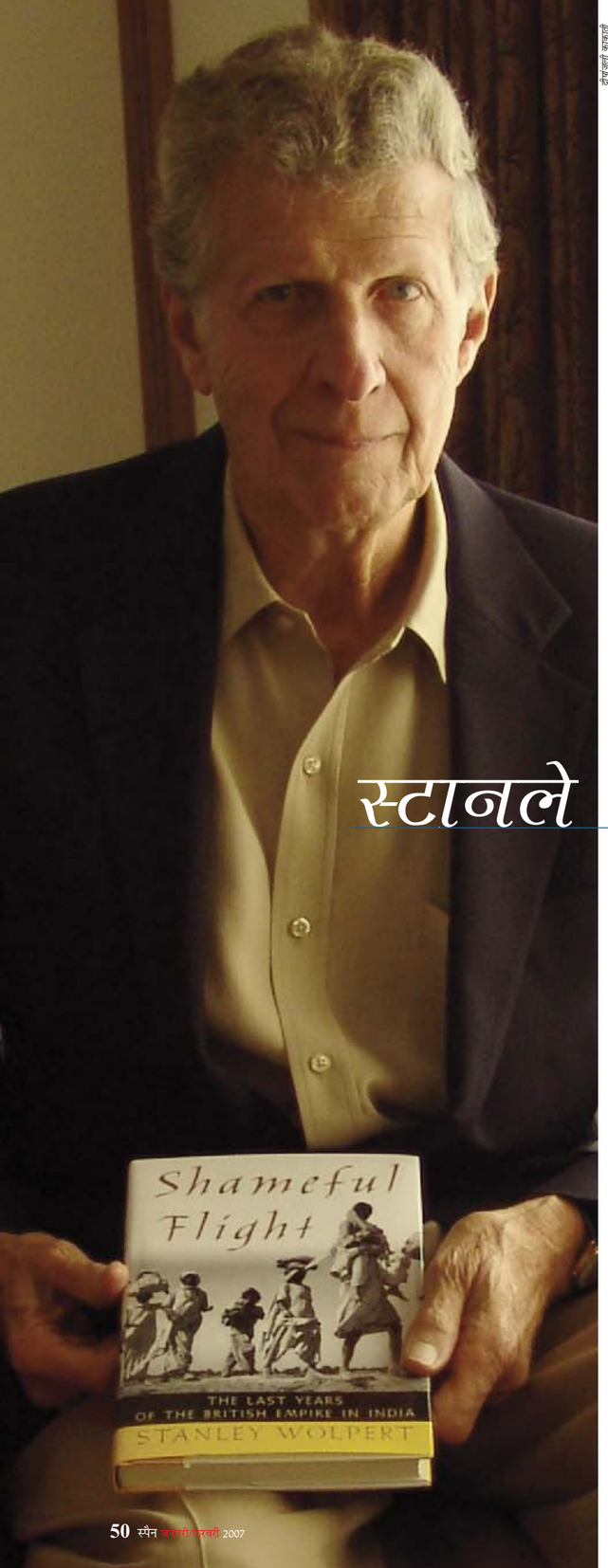

दीपांजली काकाती

स्टानले वोल्पर्ट भारतीय इतिहास से मोहब्बत

दीपांजली काकाती

''मैं लोगों की संख्या और उनकी मनोदशा देखकर आश्चर्यचकित था। मैं हैरान था कि कोई राष्ट्रपिता को क्यों मारना चाहेगा।''

आखिर वह क्या वजह थी जिसने अमेरिकी मर्चेंट मरीन के एक युवा इंजीनियर को अपने कॅरिअर की दिशा बदलने और भारतीय इतिहास का अध्ययन करने के लिए मजबूर कर दिया? इस सवाल का जवाब इस युवक को हुए उन कुछ अनुभवों में छिपा है, जिन्होंने इस बदलाव में खास भूमिका निभाई।

बीस साल का स्टैनले वोल्पर्ट महात्मा गांधी की हत्या के 13 दिन बाद, फरवरी 1948 में एक भ्रमण कार्यक्रम के तहत मुंबई पहुंचा था। तट पर उतरते ही उसने खुद को लाखों शोकमग्न लोगों से घिरा पाया। सफ़ेद कपड़ों में लिपटे ये लोग महात्मा गांधी की अस्थियों के विसर्जन के गवाह बनने के लिए खामोशी के साथ चौपाटी के तट की ओर बढ़ रहे थे।

वोल्पर्ट कहते हैं, ''मैं इतनी बड़ी तादाद में लोगों को देखकर दंग रह गया। मैं समझ नहीं पा रहा था कि किसी ने राष्ट्रपिता को क्यों मारना चाहा।'' वोल्पर्ट ने अचानक देखा कि हज़ारों लोग उस चमकीले सफ़ेद जहाज़ के पीछे-पीछे समुद्र में तैरने लगे, जिसमें महात्मा गांधी की अस्थियां समुद्र में प्रवाहित करने के लिए ले जाई जा रही थीं। लोग अस्थियों के समुद्र में विलीन होने से पहले उनको एक बार छू भर लेना चाहते थे।

लेकिन वोल्पर्ट को एक बात सबसे हैरतअंगेज लगी कि महात्मा गांधी की हत्या करने वाला भी एक हिंदू ही था। वह कहते हैं, ''मैं इस हत्या के कारणों की तह में जाना चाहता था। मैंने इससे पहले भारत का इतिहास नहीं पढ़ा था।'' वोल्पर्ट फिलहाल लॉस एंजेलेस के कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में इतिहास के मानद प्रोफेसर हैं। महात्मा गांधी पर उनकी पहली किताब 'नाइन ऑवर्स टू राम' गांधीजी की हत्या का एक कथावृत्त है। इसका प्रकाशन 1962 में हुआ।

वोल्पर्ट आधुनिक भारत और पाकिस्तान के विशेषज्ञ हैं। साथ ही वह भारतीय उपमहाद्वीप के घटनाक्रम से जुड़े इतिहास के भी विद्वान हैं। पिछले साल नवंबर में वह भारत के दौर पर थे। इस मौके पर उन्होंने अपनी नई किताब 'शेमफुल फ्लाइट' पर बुद्धिजीवियों और समाज विज्ञानियों के साथ बातचीत की। यह पुस्तक ब्रिटेन के औपनिवेशिक शासन के खात्मे का ब्यौरा देती है। इस दौरान उन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम के बहुत से ऐसे पहलुओं की जानकारी दी, जिनके बारे में लोग बहुत ज़्यादा नहीं जानते हैं। उन्होंने बताया कि तब अमेरिका के राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट ने ब्रिटेन के प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल पर भारत को आज़ाद करने के लिए दबाव डाला था।

वोल्पर्ट कहते हैं कि ज़्यादातर अमेरिकी भारत के महत्व को उस समय और भी शिद्दत से स्वीकारते हैं जब उन्हें किसी समस्या का समाधान चाहिए होता है। मसलन, जब उन्हें अपनी हवाई यात्रा से जुड़ी किसी दिक्कत का निदान ढूंढना होता है या जब किसी मशीन आदि के बारे में कोई जानकारी चाहिए होती है। उनकी शंका का समाधान फोन के जरिए बेंगलूर या पुणे में बैठा कोई शख्स करता है।

क्या भारत को नौकरियों की आउटसोर्सिंग से अमेरिका में कोई नाराजगी है? इसके जवाब में वह कहते हैं, ''बदलाव का विरोध तो हर जगह ही होता है। ब्रिटेन में जब औद्योगिक क्रांति का विरोध किया जा रहा था तो बहुत से लोगों ने इस मुहिम में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया, उन्होंने इसके खिलाफ ज़बरदस्त जंग लड़ी... और अमेरिका में भी कुछ लोगों का मानना था कि वैश्वीकरण के रुख को वापस मोड़ा जा सकता है। लेकिन मैं नहीं समझता कि अमेरिका के ज़्यादातर लोग ऐसा सोचते हैं। मुझे उम्मीद है कि आउटसोर्सिंग के कारण जिन लोगों को अपनी नौकरियों से हाथ धोना पड़ा है, वे नई नौकरियां पाने में कामयाब हो जाएंगे और एक उत्पादक तथा अच्छी ज़िंदगी जीने में कामयाब होंगे।''

कश्मीर समस्या पर लंबे समय से नज़र रख रहे वोल्पर्ट का कहना है कि अगर इस समस्या का उनके जीते जी कोई समाधान निकल सका तो उन्हें बहुत खुशी होगी। उनकी अगली किताब का संभावित शीर्षक 'इंडिया एंड पाकिस्तान: कंटीन्यूड कन्फ्लिक्ट ऑर कोऑपरेशन?' है और उम्मीद है कि यह इस दशक के खत्म होने से पहले बाज़ार में आ जाएगी। इस किताब में भी वह भारतीय उपमहाद्वीप से जुड़े मुद्दों की पड़ताल जारी रखेंगे।

वोल्पर्ट जहां भारत और पाकिस्तान के बीच संपर्क के नए बिंदु बनने और बस सेवाओं के शुरू होने से उत्साहित हैं, वहीं वह कहते हैं कि, ''दोनों मुल्कों के बीच सामान और सेवाओं के आदान-प्रदान के साथ ही विचारों का भी अधिक से अधिक आदान-प्रदान होना चाहिए। इससे दोनों देशों के लोगों को इस बात का अहसास होगा कि वे एक-दूसरे से जुदा नहीं हैं। उनकी जड़ें एक ही हैं। उनके मुताबिक, भारत-पाक रिश्तों की कड़वाहट शायद जल्द ही खत्म हो जाएगी। संभवत: यह इस साल न हो, अगले साल भी न हो और इसे मेरा अति आशावाद न कहें तो उम्मीद है कि इस दशक के आखिर तक यह विवाद सुलझ जाएगा।''

भारतीय उपमहाद्वीप से वोल्पर्ट के 58 साल के जुड़ाव की परिणति 20 से ज़्यादा किताबों के रुप में सामने आई है। उनके इस सफ़र की शुरुआत बाल गंगाधर तिलक और गोपालकृष्ण गोखले पर शोध प्रबंध से हुई। इनकी जीवनी 1962 में 'तिलक एंड गोखले' के नाम से प्रकाशित हुई। वोल्पर्ट ने पीएचडी की उपाधि पेंसिल्वैनिया विश्वविद्यालय से प्राप्त की।

वोल्पर्ट कहते हैं, ''मुझे अपनी हर किताब की शुरुआत में कुछ अलग ही किस्म की चुनौतियों का सामना करना पड़ा है, लेकिन हर बार करीब पांच साल बाद मुझे ऐसा लगता था कि यह विषय मेरे लिए अजनबी नहीं है। तिलक एंड गोखले लिखने में मुझे काफ़ी दिक्कत हुई, शायद इसकी वजह यह थी कि यह सफ़र की शुरुआत थी।'' भारतीय इतिहास पर लिखी गई उनकी किताबों की समालोचना हुई। उनकी प्रमुख किताबों में 'द ब्रिटिश राज', 'कन्फ्रंटेशन इन साउथ अफ्रीका' और 'द जलियांवाला बाग मैसेकर' शामिल हैं। उनके द्वारा लिखी गई जीवनियों में 'नेहरू: अ ट्रायस्ट विद डेस्टिनी', 'जिन्ना ऑफ पाकिस्तान' और 'जुल्फी भुट्टो ऑफ पाकिस्तान' भी चर्चा में रहीं।

अपनी पुस्तकों के बारे में वोल्पर्ट कहते हैं, ''एनसाइक्लोपेडिया ऑफ इंडिया मेरे शोध जीवन का सबसे अहम काम है।'' चार खंडों में तैयार इस विश्वकोश में दुनिया के करीब दो सौ विशेषज्ञों ने अपना योगदान दिया है।'' वोल्पर्ट ने इसके लिए आंशिक तौर पर लेखन भी किया और पांच साल इसके संपादन में लगे।

'गांधीज पैसन' के लेखक वोल्पर्ट की लगे रहो मुन्नाभाई के इस दौर में गांधीवादी विचारों में नए सिरे से रुचि जगी है। वह कहते हैं, ''गांधी के विचार आज न सिर्फ प्रासंगिक हैं, बल्कि बेहद महत्वपूर्ण भी हैं। खासतौर से ऐसे समय जब युद्धों की नाकामी साबित हो चुकी है, मैं समझता हूं कि शांति और अहिंसा को बढ़ावा मिलना ही चाहिए। मैं यह भी मानता हूं कि आज के युवा मौत और संघर्ष से अघा चुके हैं। वे गांधीजी के घृणा से दूर रहने के संदेश को हम सबके लिए बहुत मूल्यवान मानते हैं।''

वोल्पर्ट को भारत और अमेरिका के संबंधों का भविष्य काफी उज्ज्वल नजर आता है। वह कहते हैं, ''ये दोनों मुल्क मूल्यों के प्रति समर्पित हैं। ये मूल्य न सिर्फ लोकतांत्रिक हैं, बल्कि दुनिया को एक सुरक्षित जगह बनाने के लिए भी बने हैं। और दोस्ती.. वह तो आने वाले समय में और भी मजबूत होगी, क्योंकि हमारे आर्थिक रिश्ते मज़बूत हो रहे हैं। इन रिश्तों से हमारे और कई सरोकारों का जुड़ना तय है। आज अमेरिका से बड़ी संख्या में लोग भारत आ रहे हैं और इससे मुहब्बत कर रहे हैं। ठीक वैसे ही, जैसे आज से 58 साल पहले मेरे साथ हुआ था।''

कृपया इस लेख के बारे में अपने विचार editorspan@state.gov पर भेजें।

स्टानले वोल्पर्ट की पुस्तकें नई दिल्ली, कोलकाता और चेन्नई के अमेरिकी पुस्तकालयों में उपलब्ध हैं।

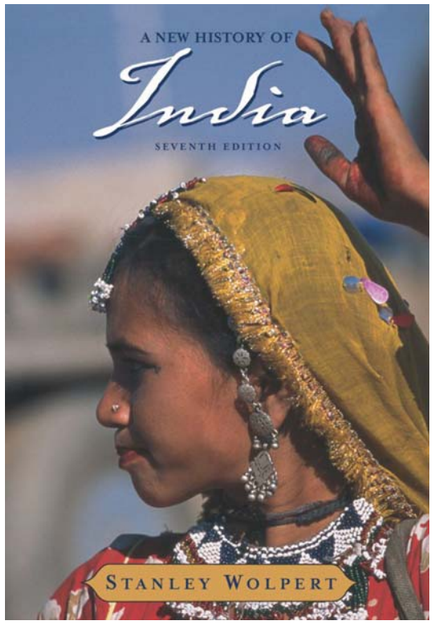

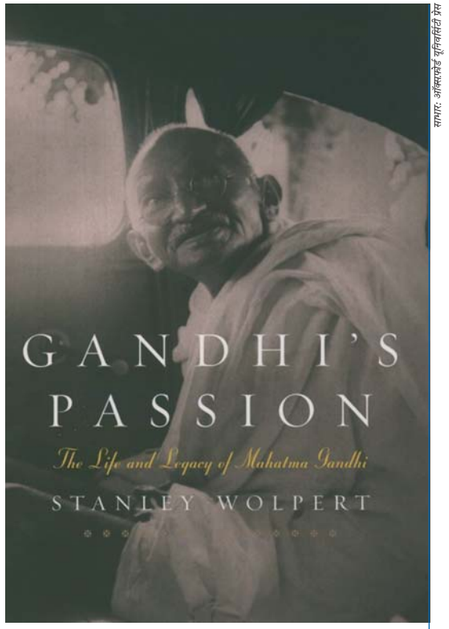

सागर: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस